

श्चेठ केशबलाल समझल सरफ्यी मेट.

## श्रीमद् धर्मासंहजी

अन श्रीमद् धर्मदासजी

श्रीसद् घसद्यस्ति। [सामापिक, आयुष्पकमं धने क्षापक सम्प-वरवनी पर्पाठोचना मापे]

> टेंचर टेंचर मुनिराज श्री हर्पचंद्रजी ( दरिवापुरी संगदाय )

मकाग्रक मकाग्रक द्रोठ नागरदास केशवलाल

क्षकोल (च. गुजराव)

प्रथम आवृत्ति संवत १९८० प्रत ५०० १. छ. १९१४ भी वीरद्यासन मीटींग जेसमा केदावलाल दलसुल-

माइये छान्युं- है. हाजापटेलनी पोळ-अवदावाद.

पारिता सहत्रम् सर्वे वस करको बसा समी सहस्ता, भाग काह समी निवय करकी मारा करें सुमनी; पास्त्र होत्तर कर परिचण नवी है जो सहस्र हे बस्तुमी, स. यादा सहस्त बोस्ट जनमां कीस्पैरीना इष्ट मी।

## प्रस्तावना.

ष्ट्रनिराम सी र्पर्यंत्रभी स्वायी क्लोक्स १९७६ नी सालनुं काहुपाँत रहा हुना स्वारे उपाध्यपनी अंदर पूकांत्रमाँ संत्रपूर्वक कों करूपा करता हना त्यार व्यारे मारा आवानां मार्च्य के प्रका स्थानपूर्वक ते वे काहि करता हना वे भी पर्वेशित्सनी तथा भी पर्यदासमीना जीवनविस विवे वया सामायिक, आयुष्यक्ष अने साथक सुम्यक्ष्य विवे कोक्सोमाँ पेसी गएला वेटलाक अनिष्ट विचारिन यथेष्ट दिवाए परिव-वेशित काला मार्टिनो क्यू ग्रंथ करता हना स्थारे ए ग्रंथ मसिद्ध करीन कुताथ यवानी मने अविकास पर्द आवेक्षों, ते आवे एगे पर छै.

भा दुस्तक सुमरान तथा बाळ्डा, धारबार, पंताब बगेरे स्वळ्ना जैन मार्डभोने उपयोगी यह पर देटला माटे सुनराठी भाषा उर्जा वासीय खिषयां छाप्युं छे.

युश्नक अधिकारीता शायमां श जवा पामे प्रवी स्ताधी रासीने तेतुं वितरण करवानी पारी शंकरत छे. तेतुं कार्र् मृत्य राम्युं नथी पण जो भा युश्तक थोग्य शायकोना शा-पर्या क्रिने कार्र्र पण मारी असर करनार्व पर्ये तो हूं यने कृत-कृत्य यपनी सानीज.

होट नागरदास केशवलाल.

न'न' न ना खेलाराई भागे एक नानकई पुरुष जन

लयान जातमह ने पहलां नेतो भू बहेश छै, ए कहें। केंद्र स थ रावह रारवा अन काईक जगावना इच्छे छै.

'रहर वरन १०५८ ना वर्षमां बाद मामना समय दर-बायान माह्यामाबना स्टलाक मामोमा सेलकते विचारी पा रह र स्वार अपान अपामहत्री ने भीमान पर्यहामत्री '11 1 " '15 % । बन्नव' वचन काण ए स्वि रिचारी मिश - थ । १ व । १वा लाब ब्यावां भाष्या. केटलाकी प्य करत र इस्तार सम्बद्ध विशेषी हुना, प्रयादे की नामी वर ६९६ ४०७ ६ वर्षाचहन स्थान न यळपु चटले तैमणे ·· · · · · । र नक श पहते के वर्षेतिष्ट प नामनी . . . . . . . . . . . . . . . विशेष प्रवृकार्द जागरा · · · · · · · · · · · · दा व्यक्तिको तरफयी

. . . . . . . . . नवह न मानळवामां भारी. उपरांत • • • • • • • व विकास मात्र को दिए याप ' रा र । ... रा न : क्र'टए बाय छे **ए**ई ती ं ' ' - व ' व ' व वर्ग छ कोटिए करे छै

क न र र रा दार ६ तन व'नवता नवी, आम गुरु द स सनद त' + = । या नार अपनानी धेरद्वापटेटी बाहायना संदेश र राज विकास है।

अवा व 'रव स-४ इकादन शृ छ, व बहार मृत्रशानी

क्या नवदन ग्रहा व र तो वन व्याख्यी देखेड

बत्तर वस ने एम भीती गयो. युना प बार्जा हमणी काहूँक मनंग दिवारमी उपस्पित वर्जा स्कृती आबी, ने दिवार्ष के य संबंधी स्टिप्ट वहि कोषण यहाँकीयत अनसमाजना दिव स्वार सत्ताय को सार्ट. आधी भीवान, पर्यासकी ने भीवान, पर्यदासनी विषे

पेतिहासिक रष्टिए ये बस्तु उपलब्ध पर्द हती ते सोमाँ प्रयये दालक करी छे. स्यारपणी सामापिकती ने मसंगोशाच का-युष्पकर्षेती ने शायक सम्पक्तनी समीक्षा दालक करी छे. आ सपीक्षा करनाना आशाप ए छे के शिक्ष भिन्न गण्य बाह्य स्यक्तिमी प्रयुरद्वारा मळेली हकीकतने अविचार असमन-

णपी पकरी राखे छै, ने आग्रह मयत करी सत्य बस्तुपर तेमी आववा इच्छा नयी, तेभीने आ बस्तु पतेद पढे हो तेभी अवस्य आ मुक्का विषयपर प्यान खेंचे पूप इस्तुं छुट सामाधिक विषयती सधीला करता पुरेशकी तरहरी

सापाविक विषयती सभीता करती पूर्वनाही तरफरी
परंतर मानी छीपेछा विचार ए ज मनाण, ए सिवाय बीर्ड कोई
मंपाण न मळ्यायी, मृहवायों आन्धुं छे, उधरवाही तरफपी
माम पहन प्रमाण मळ्यां तेने आ स्पष्ट युव्युं छे, आहुएवकंभैने सायक मम्पफ्त विचे यो पूर्व स्ता पुरंक्त पुराता छे,
ए संबंधी विवेचन विशेष आवश्यक, कर्मव्हिति, कंभै
मृत्य विगेरे पणां पुरवकीयां छे, तीषण कर्मवृह्दिसों अने
वेचसंप्रस्यां ए संबंधी विशेष स्वास्थ्या होवायी ने बीजाओप
तेमोनां ममाण छीपेकां होवायी अब तेवायों केटलाक स्नास्त हुनस्त स्वास

प्या ३ थ मा माना पत्त्रना प्रमाणी भानातांग, सुप्रकृतीम, रच न'त, धमन बात रजात्मा, उत्तरात्यवन विवेरेमधि 21 40-1"

ाक प्रत्येश सन्द्रमण श्रुत आरो वाला सामि र रर र र'द्रार राय र है। अधार रामारी समान बही बा-रुक्त रहा । जा राज्य वर्षा अन्याना **क्ष शास्योना मृत्र** a च क जाजब ३ जल्ला इय रूप रेश जंद तमारी समृद्ध ा १११ १ ११ १४ १४ १७ इस्टाइस्ट **सम्ब**र्ग-ार राज्य स्थापन स्थापन स्थापनी से स्थापन स्थापनी से स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स् र र र १ ) र १३३ का । अद्यक्त**ाना श**ासी

व ४ १० - ११ । १९ त्युरेह असन्य प्राप्त प्राप्त - स्राप्त वर्षा वर्षा स्थानिक हो हेती सुरक्ती तमान पुस्तकामा निविध . . . म अन्य प्रश्न के स्वर्थ के प्रश्न के प्रश्न

- र १४ र र मा धन्ययामधी भूड र व ४४ व व १५ व विश्ववर्षे とように さげる かが者 子籍者

auf eine R. ger Ri-444 1 467

मुनि ह्येयद्वता